आर्य समाज ... जिला-अजमेर

ओ३म्

पञ्चकन्याचरित्र

३५७६
... पु॰ १६

जिस को पढ़ते ही आर्यसमाज के निन्दक पौराणिकों के महापातक दूर होते हैं नियोग और पुनर्विवाह की निन्दा का मुख नहीं रहता। धर्ममहामण्डल के उपदेशकों को भगाना हो तो इसे बांट दो

परीक्षितगढ़ निवासी एक आर्य ने रचा और पं॰ तुलसीराम स्वामी सामवेदभाष्यकार ने

स्वामि मेशीनयूनआ ... दयान
सन्दर्भ पुस्तकालय
परिग्रहण क्रमांक 4837

मुद्रित कर[illegible]

संवत् १९६७

चतुर्थवार २५००] [illegible]

संख्या ...
तिथि ...
पुस्तकालय ...

ओ३म्

पञ्चकन्याचरित्र

अहल्या द्रौपदी तारा कुन्ती मन्दोदरी तथा ।
पञ्च कन्याः स्मरेन्नित्यं महापातकनाशनम् ॥

बहुधा आर्यमतविरोधी लोग श्री महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज और आर्यसमाज की निन्दा करने के लिये नियोग विषयक **पतिमेकादशं कृधि** वाक्य के अर्थ का हास्य किया करते हैं, उन को अब अपनी मान्य पञ्चकन्याओं के इस चरित्र का नित्य पाठ करना चाहिये कि वह निर्लज्जता है वा यह । मुझे पूर्ण आशा है कि अब वे लोग ग्यारह पति का ज़िकर मुख पर न लावेंगे ॥

अहो ! काल की चाल भी क्या ही निराली है, कभी कोई जिसे घृणित समझता है, उसी बात को किसी समय कालचक्र के प्रवाह में लोग उत्तम कर्म समझते हैं। ऊपर का श्लोक हमारे भोले पौराणिक भाई नित्य स्मरणीय समझते हैं, इसी लिये उस का एक छोटा सा व्याख्यान

लिखता हूं क्योंकि-**व्याख्यानतो विशेषप्रतिपत्तिर्नहि संदेहादलक्षणम्** महाभाष्यकार महामुनि पतञ्जलि का वचन है ॥

भला जिस श्लोककथित पञ्चकन्या का स्मरण महापातकों को काटता है तो उन के विशेष चरित्र सुन कर वा पढ़ने से क्यों न उन के हृदय का मल दूर होगा। बल्कि इस से तो पौराणिकों के जन्मान्तरों के भी महापातक नष्ट होने चाहियें। हम पूर्ण आशावान् हैं कि इस के पढ़ने से इतना पातक तो अवश्यमेव दूर हो ही जायगा कि वह आर्यसमाज से नियोग विषय पर ठट्ठेबाज़ी कभी भी नहीं करेंगे। यदि इस पञ्चकन्याचरित्र से उन का हृदय शुद्ध और आर्यसमाजविरोध रूप भी महापातक कट जाय तो भी क्या इस श्लोक को कोई झूठ बता सकेगा? कदापि नहीं। हां, यदि इस के पढ़ने पर उन का हृदय शुद्ध न हुवा तो हमें भी और अन्यों को भी यह श्लोक झूठ जान पड़ेगा ॥

पाठकगण! मैं केवल इसी का अर्थ मात्र न करूंगा बल्कि इसी प्रकार के तथा इस से भी अधिक अन्य चरित्र भी और कलियुग में मान्य स्मृतियों और पौराणिकों के पञ्चमवेद महाभारत की भी कथा लिखूंगा, क्योंकि मैंने

यह पाठ बहुत पौराणिकों से सुना है कि अधिकस्याधिकं फलम् देखें भला कितने पौराणिक इन महावाक्यों के सत्य होने के प्रमाण बनते हैं ?

अहल्या द्रौपदी तारा कुन्ती मन्दोदरी तथा ।
पञ्च कन्याः स्मरेन्नित्यं महापातकनाशनम् १

अहल्या १ द्रौपदी २ तारा ३ कुन्ती ४ और मन्दोदरी ५ इन पांचों कन्याओं का स्मरण नित्य करे जो महापातकों का नाश करता है ॥

१ प्रथम कन्या इन में अहल्या है, जो गोतम जी की स्त्री थी । एक समय इन्द्र और चन्द्र दोनों ने एक मत हो इस का पतिव्रत भङ्ग किया, इस अपराध में गोतम जी ने इसे त्याग दिया ॥

२ द्रौपदी के तो प्रसिद्ध ही पांच पति पांचों पाण्डु पुत्र युधिष्ठिर भीम अर्जुन नकुल और सहदेव थे, बल्कि इस के विवाह में राजा धृष्टद्युम्न द्रुपद ने तो कहा भी है, महाभा० आदि प० अ० १९८

धृष्टद्युम्न उवाच

अधर्मोयं मम मतो विरुद्धोलोकवेदयोः ।
न ह्येका विद्यते पत्नी बहूनां द्विजसत्तम ॥७॥

न चाप्याचरितः पूर्वैरयं धर्मोमहात्मभिः ।
न चाप्यधर्मो विद्वद्भिश्चरितव्यः कथञ्चन ॥८॥
अतोहं न करोम्येनं व्यवसायं क्रियां प्रति ।
धर्मः सदैव संदिग्धः प्रतिभाति हि मे त्वयम् ९

अर्थ-एक पत्नी बहुत पतियों की हो यह मेरी बुद्धि में लोकरीति और वेदरीति दोनों के ही विरुद्ध है ॥ ७ ॥

यह धर्म पूर्वज महात्माओं ने आचरण नहीं किया। और विद्वानों को कभी भी अधर्म नहीं करना चाहिये ॥८॥

इस लिये मैं इस कार्य की हिम्मत नहीं करता। यह कर्म मुझे तो सदा संदिग्ध ही भान होता है ॥ ९ ॥

परन्तु फिर भी यह पांचों ही के साथ वारी २ सिर रही है। यह दूसरी कन्या का चरित्र संक्षेप से समाप्त हुवा ॥

३ तीसरी कन्या **तारा** है जो बालि नाम वानर की स्त्री थी। जब बालि **मय** दैत्य के पुत्र से लड़ने गया और सुग्रीव उस का छोटा भाई था उस ने उसे मरा समझा और मन्त्रियों से सलाह कर गद्दी पर बैठ गया और अपने बड़े भाई बालि की स्त्री को भी घर में गेर लिया था, तब बालि राक्षस को मार कर आया और सुग्रीव

को राज्य पर बैठा पाया। तथा अपनी स्त्री तारा को भी उस के घर में देख झुंझलाया और सुग्रीव को मार भगाया, सुग्रीव की स्त्री रुमा को अपने घर में गेरा। इस महापाप को देख श्री रामचन्द्र जी ने बालि को मार सुग्रीव को राज्य दिया और तारा का फिर उसी देवर सुग्रीव से नियोग कराया। यह तीसरी कन्या तारा हुई हैं॥

४ चौथी कुन्ती है, जो पति के शापित होने पर भी तीन पुत्र युधिष्ठिर भीमसेन अर्जुन को पैदा कर तीन लोक में विख्यात है कि तीन देवतों से उस का नियोग हुआ और क्वारी के कर्ण भी पैदा होचुके थे। इस का अधिक वर्णन हमारे बनाये **नियोगनिर्णय** पुस्तक में देखिये, महाभारत के श्लोक भी वहीं लिखे हैं॥

५ वीं मन्दोदरी कन्या है, जो रावण राक्षसराज की वीराङ्गना थी और रावण के मरने पर उस के छोटे भाई विभीषण के घर में रही और नियोग हुआ॥

पाठक! इस श्लोक का बड़ा गूढ़ अर्थ है। वह हम अपने भाइयों को समझाते हैं। यदि भारतवासी इन पांचों का स्मरण नित्य किया करते तो क्यों इतनी बालविधवाओं की संख्या बढ़ती जो हज़ारों भ्रूणहत्या करती हैं। इन

को स्मरण कर नियोग रीति श्री स्वामी जी ने चलाई थी, जिस से महापातकों का नाश होना सम्भव है। भ्रूणहत्या के सिवाय अन्य क्या महापतक होगा? भ्रूण-हत्या ही नहीं सैंकड़ों विधवा म्लेच्छों से सङ्ग करती हैं, उन से सन्तान होकर महापातक करती हैं॥

यदि हामरे सनातनी भाई, इन पांचों कन्याओं को नित्य याद किया करें और पुनर्विवाह वा नियोग को जारी करदें तो निस्सन्देह महापातकों का नाश होना सम्भव है। हमारी समझ में जब भ्रूणहत्यादि महापाप धरणी पर देखे और नियोगादि करने में संसार में निन्दा देखी तो किसी महात्मा ने यह श्लोक बनाया कि हे भारतवासियो! देखो तुम्हारे शास्त्रों में क्या लिखा है, तुम याद करो, नित्य याद करो, जिस से तुम्हें कभी याद आवे कि जब हमारे शास्त्रों में ऐसा लिखा है तो हम क्यों न नियोग को जारी करें, क्यों दोष के भागी रहें॥

प्यारे सनातनी भाइयो! बस अब तो आर्यसमाज की निन्दा को त्यागो, होश में आओ, निद्रा से जागो, देखो तुम्हारे मान्यग्रन्थ स्मृतियों तक में भी विरोधियों ने नये घड़न्त श्लोक घूंस दिये, जिन को (तुम्हारे सनातन-धर्म की निन्दा न हो, इस कारण और परस्पर विरोध

देख कर) आर्यसमाज प्रक्षिप्त बताता है और तुम ऐसे विक्षिप्त हो रहे हो कि उन की कौली ही भरे जाते हो और उन ग्रन्थों के समस्त श्लोक मात्र को सत्य ही मानते हो। जिस कारण तुम्हारे सैंकड़ों भाई मुसलमान, हजारों ईसाई होते चले जाते हैं, जो तुम्हारे ही नहीं, तुम्हारी सन्तान तक के धर्मशत्रु हो जाते हैं। यह नहीं तो उन की सन्तान अवश्य धर्मवैर करेगी॥

आजकल संस्कृत भाषा का कम प्रचार है, इसी कारण कुछ आदमी धर्मसभा के नाम से सभा करते हैं और असंस्कृतज्ञों के सम्मुख यह ममता कर बैठते हैं कि सभी श्लोक सत्य हैं और प्रमाण हैं। इस लिये आज हम कुछ श्लोक अष्टादशस्मृति के अन्तर्गत अत्रिस्मृति १८९ से १९९ तक लिखते हैं। भला इन का आप क्या अर्थ करेंगे ? और यदि इन्हें सत्य मानोगे तो तुम्हारे भोले भाई क्यों न सनातनधर्म से पृथक् हो जायगे॥

अमीमांस्यानि शौचानि स्त्रीणां च व्याधितस्य च। न स्त्री दुष्यति जारेण ब्राह्मणो वेदकर्मणा॥ १८९॥ नापो मूत्रपुरीषाभ्यां नाग्निर्दहतिकर्मणा। पूर्वं स्त्रियः सुरैर्भुक्ताः

सोमगन्धर्ववन्हिभिः। भुञ्जते मानवाःपश्चान्न ता दुष्यन्ति कर्हिचित् ॥ १९० ॥ असवर्णस्तु योगर्भः स्त्रीणां योनौ निषिच्यते। अशुद्धा सा भवेन्नारी यावद्गर्भं न मुञ्चति। विमुक्ते तु ततः शल्ये रजश्चापि प्रदृश्यते ॥१९२॥ तदा सा शुद्ध्यते नारी विमलं काञ्चनं यथा ॥

फिर—

प्रारब्धदीर्घतपसां नारीणां यद्रजोभवेत् ।
न तेन तद् व्रतं तासां विनश्यति कदाचन १९९

अर्थ रोगी पुरुष और स्त्रियों की शुद्धि मीमांसा के योग्य नहीं। स्त्री जारकर्म से दूषित नहीं होती, ब्राह्मण वेदकर्म से ॥ १८९ ॥

जल विष्ठा मूत्र से, अग्निदाहकर्म से अशुद्ध नहीं होता। प्रथम स्त्रियां सोम गन्धर्व अग्नि देवों ने भोगी हैं, पीछे मनुष्य भोगते हैं। इस लिये वह दूषित नहीं होतीं॥१९०॥

असवर्ण का गर्भ स्त्रियों की योनि में जाने से जब तक गर्भ न छोड़े तब तक वह नारी भ्रष्ट रहती है । गर्भ

निकल जाने पर रजस्वला भी हो जावे तब तपे सोने के समान शुद्ध हो जाती है ॥ १९८ ॥

बड़ी भारी तपस्या का फल है कि जो स्त्रियों के रज होता है, इस से इन का व्रत भङ्ग नहीं होता ॥ १९९ ॥ जब स्त्री अशुद्ध होकर भी प्रतिमास शुद्ध हो जाती है तो फिर वह कैसे पतित हो सकती है ?

परन्तु हमारे मन को यह लेख नहीं भाते हैं, हां मनु जी की आज्ञा तो शिरोधार्य ही है । क्योंकि—

यद्वै किञ्चन मनुरवदत्तद्भेषजम् ।

मनु जी कहते हैं:—

सा चेदक्षतयोनिःस्याद्गतप्रत्यागतापि वा ।
पौनर्भवेन भर्त्रा सा पुनः संस्कारमर्हति ॥१॥

जो स्त्री अक्षतयोनि है, चाहे पति के घर गई आई भी हो वह पौनर्भव भर्त्ता के साथ फिर संस्कार के योग्य है ॥

नारदस्मृति का सिद्धान्त "अक्षता पुनः संस्कृता पुनर्भूः" अक्षतयोनि स्त्री का यदि पुनर्वार संस्कार हो तो उसे पुनर्भू कहते हैं ॥

तथा पराशर स्मृति जो कलियुग में ही विशेष मानने योग्य कहते हैं उस के क्या अर्थ करोगे ? अब थोड़े प्रमाण पराशरस्मृति के लिखता हूं । यथा:—

यथाभूमिस्तथा नारी तस्मात्तां न तु दूषयेत्

(अध्याय १० श्लोक २५)

जैसी पृथिवी तैसी नारी, इस कारण इसे दोष न धरे ॥ (जिस राजा का राज्य हो, उस की स्त्री पृथिवी हो जाती है ॥ सम्पादक) और अध्याय ७ श्लोक ४ में:-

रजसा शुद्ध्यते नारी विकलं या न गच्छति ॥

नारी रजस्वला होने पर शुद्ध हो जाती है ॥

आगे अ० ११ में श्लोक २४

क्षत्रियाच्छूद्रकन्यायां समुत्पन्नस्तुयः सुतः ।
सगोपालइतिख्यातो भोज्यो विप्रैर्नसंशयः ॥

अर्थ-क्षत्रिय से शूद्र की कन्या में जो पुत्र हो उस गोपाल के साथ विप्रों को भोजन योग्य है । इस में संशय नहीं ॥

पराशर को सभी सनातनधर्मी कलियुग में महामान्य मानते हैं जैसा कि उसी के अ० १ में श्लोक २४

कृते तु मानवा धर्मास्त्रेतायां गौतमाःस्मृताः।
द्वापरे शङ्खलिखिताः कलौपाराशराःस्मृताः॥

सत्ययुग में मनुस्मृति के धर्म, त्रेता में गोतम स्मृति के, द्वापर में शङ्खस्मृति के और कलियुग में पाराशरी स्मृति के धर्म मान्य हैं ॥

याज्ञवल्क्य स्मृति में-

सकृत् प्रदीयते कन्या हरंस्तां चोरदण्डभाक् ।
दत्तामपि हरेत्पूर्वाच्छ्रेयाँश्चेद्वर आव्रजेत् ॥

यदि श्रेष्ठवर मिल जावे तो दी हुई कन्या भी हरलेवे ॥

आगे एक उतथ्य की कथा और सुनाते हैं, उसे सुन कर भी क्या कोई आर्यसमाज के नियोग सिद्धान्त को बुरा कहेगा ? मेरी सम्मति में तो यह उतथ्यादि की भी कथा सब धर्मद्वेषियों की ही बनाई हैं और हमारे मान्य ग्रन्थों में मिलादी हैं कि जिस से लोगों की श्रद्धा इतिहास ग्रन्थों से भी उठ जावे ॥

महाभारत कथा आदिपर्व अध्याय १०४

अथोतथ्य इति ख्यात आसीद्धीमानृषिः पुरा । ममता नाम तस्यासीद्भार्या परमसम्मता ॥८॥ उतथ्यस्य यवीयांस्तु पुरोधास्त्रिदिवौकसाम् । बृहस्पतिर्बृहत्तेजा ममतामन्वपद्यत ॥ ९ ॥ उवाच ममता तन्तु देवरं वदतांवरम् । अन्तर्वत्नी त्वहं भ्रात्रा ज्येष्ठेनारम्यतामिति ॥१०॥ अयं च मे महाभाग !

कुक्षावेव बृहस्पते । औतथ्योवेदमत्रापि
षडङ्गं प्रत्यधीयत ॥ ११ ॥ अमोघरेतास्त्वं
चाऽपि द्वयोर्नास्त्यत्र संभवः । तस्मादेवं च
न त्वद्य उपारमितुमर्हसि ॥ १२ ॥ एवमुक्त-
स्तया सम्यग्बृहस्पतिरुदारधीः । कामात्मानं
तदात्मानं न शशाक नियच्छितुम् ॥ १३ ॥
संबभूव ततः कामी तया सार्धमकामया ।
उत्सृजन्तं तु तं रेतः सगर्भस्थोऽभ्यभाषत ॥१४॥
भोस्तात ! मा गमः कामं द्वयोर्नास्तीह संभवः।
अल्पावकाशोभगवन्पूर्वं चाहमिहागतः॥१५॥
अमोघरेताश्च भवान्न पीडां कर्त्तुमर्हसि ।
अश्रुत्वैव तु तद्वाक्यं गर्भस्थस्य बृहस्पतिः
॥ १६ ॥ जगाम मैथुनायैव ममतां चारु-
लोचनाम् । शुक्रोत्सर्गं ततोबुद्ध्वा तस्या
गर्भगतो मुनिः। पद्भ्यामरोधयन्मार्गं शुक्रस्य
च बृहस्पतेः ॥ १७ ॥

अर्थात् प्राचीन काल में एक उतथ्य नाम ऋषि होता भया, ममतानाम्नी बड़ी अच्छी उस की स्त्री थी ॥ ८ ॥ उतथ्य का छोटा भाई देवतों का पुरोहित महातेजस्वी बृहस्पति ममता के पास गया ॥ ९ ॥ उस बड़े मधुरभाषी देवर से ममता बोली कि मैं तो आप के बड़े भाई से गर्भवती हूं इस लिये आप रहने दीजिये ॥ १० ॥ और हे बहुभागी ! यह उतथ्य का पुत्र मेरी कोख में है । हे बृहस्पते ! इसने यहां भी छः अङ्ग वाला वेद पढ़ा है ॥ ११ ॥ और आप का वीर्य भी व्यर्थ नहीं जा सकता और यहां दो की गुञ्जाइश नहीं, इस लिये आज तो मेरे पास आना योग्य नहीं है ॥ १२ ॥ इस प्रकार उस बड़ी बुद्धि वाले बृहस्पति से उस (ममता) ने कहा भी, परन्तु वह अपने काम को न रोक सका ॥ १३ ॥ निदान वह कामी उस कामरहिता के शिर हुवा और जब मैथुन करने लगा तो वह गर्भस्थ बोला कि ॥ १४ ॥ चचा ! काम के वशीभूत न हूजिये । यहां दो की गुञ्जाइश नहीं है, जगह थोड़ी है और मैं पहले आ पहुंचा हूं ॥ १५ ॥ और आप का शुक्र भी वृथा नहीं जा सकता । इस लिये तकलीफ़ न दीजिये परन्तु बृहस्पति ने उस गर्भस्थ की एक न सुनी ॥ १६ ॥ और उस से मैथुन के लिये पहुंच ही गया । क्योंकि उस की आंखें बड़ी अच्छी थीं । तब गर्भगत मुनि ने शुक्रपात

होते जाना तो बृहस्पति के शुक्र का मार्ग दोनों पैरों को एड़ियों से रोक दिया ॥ १७ ॥

क्या ऐसी घिनौनी शिक्षा से भी जिस में वेदवेत्ता ऋषियों की इस प्रकार निन्दा है) आप को घिन नहीं आती ? यदि इतने पर भी नियोग निन्दा करेंगे तो हम महाभारत के आदिपर्वान्तर्गत हरणाहरणपर्व अध्याय २२६ का कृष्णवाक्य दिखावेंगे, क्या तब भी शर्म न आवेगी ?

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

मनुस्मृति-भाषानुवाद सहित पांचवीं बार

धर्म के प्रेमी मनुष्य मनु को सर्वोपरि धर्मशास्त्र मानते हैं। स्मृतिशास्त्र में सर्वोपरि मान्य ग्रन्थ मनु से बढ़कर कोई नहीं है इस कारण हमने बहुत ही उत्तम भाषा-अनुवाद सहित छपाया है। इस में ३० प्रकार के पुस्तकों को देखकर पाठभेद पाठाधिक्य सब दिखाया गया है और ऐसे पाठ दिखाये गये हैं कि जो अब मुम्बई आदि की पुस्तकों में नहीं छपे वा जो पाठ पूर्व पुस्तकों में नहीं थे, वह आज कल बढ़ाकर छपे मिलते हैं ॥

प्रक्षिप्त श्लोकों पर उत्तमयुक्तियुक्त विचार है। इस की उत्तमता इसी से ज्ञान पड़ती है कि ४ बार के छपे ९००० पुस्तक हाथों हाथ बिक गये, अब पांचवी बार २५०० छापा है। प्रति पुस्तक १), बढ़िया सचित्र १।)

मैनेजर-स्वामी प्रेस-मेरठ

गुरु विरजानन्द ... सन्दर्भ पुस्तकालय
पु. परिग्रहण क्रमांक 4837
दयानन्द महिला महा...